सीबीएसई कक्षा - 12 2014 हिन्दी (केन्द्रिक) सेट-2
(दिल्ली)

निर्देश:

- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में मुद्रित पृष्ठ 8 हैं।
- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में 14 प्रश्न हैं।
- कृपया प्रश्न का उत्तर लिखना शुरू करने से पहले, प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें।

खण्ड-'क'

1. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए: (1×5=5)

स्वार्थ का ज़हर

जब तक आवृत रखेगा

मानवता की आकृति को

और

स्वार्थ की नींव जब तक

जुड़ी रहेगी धन के गारे से

तब तक

आत्मसंतोष केवल

कल्पना की वस्तु होगी।

कितने ही त्याग और

धर्म के उपदेश करें

अभावों की यह रात

सूनी-सी अन्धी रहेगी

सोचने से कार्य नहीं हो जाता

कल्पना से यथार्थ मेल नहीं खाता

आदर्श और धर्म को

कागज़ पर उतारने से फ़ायदा क्या,

उत्तरदायित्व और संवेदनाहीन

इन थोथी डिग्रियों से

जीवन के दुख का रहस्य

सुलझ नहीं पाता।

(क) किन स्थितियों में आत्मसंतोष कल्पना की वस्तु होता है?

(ख) 'अभावों की रातें' से कवि को क्या अभिप्रेत है? यह रात और अधिक 'सूनी' और 'अंधी' कैसे हो जाती है?

(ग) आशय स्पष्ट कीजिए:

'आदर्श और धर्म को

कागज़ पर उतारने से फ़ायदा क्या?'

(घ) 'डिग्रियाँ' क्या हैं? उन्हें थोथी क्यों कहा गया है?

(ङ) 'जीवन के दुख का रहस्य' कैसे सुलझ पाता है?

उत्तर- (क) जब स्वार्थ और धन का बोलबाला हो।

(ख) जीवन के कष्ट, कमियाँ, स्वार्थ से पी़डित होने के कारण।

(ग) आदर्श, धर्म आदि लेख/पुस्तकें लिखना व्यर्थ है यदि ये जीवन के अंग न बनें।

(घ) शिक्षित होने के प्रमाण जीवन के अनुभवों के लिए अनुपयुक्त।

(ङ) उत्तरदायी और संवेदनशील होने से।

2. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

जिस समय लोकमान्य तिलक ने राजनीतिक क्षेत्र में कदम रखा उस समय पूरा देश चैतन्यहीन और स्वत्वहीन हो चुका था। देश के करोड़ों निवासी जंगल के सूखे पत्तों की तरह अस्त-व्यस्त थे। उनमें जीवन नहीं था, एकता नहीं थी, उनका आत्मविश्वास मर चुका था। उनके मन में यह भरा जा चुका था कि अंग्रेज़ी साम्राज्य इस देश पर सदा शासन करने वाला है।

इस परिस्थिति को बदलने की आवश्यकता तिलक ने महसूस की। उन्होंने उन्हीं असंगठित पत्तों जैसे लोगों को इकट्ठा किया और उनमें राष्ट्रीय स्वातंत्र्य के लिए संकल्प जगाया। देश का बहुसंख्यक समाज परलोक को अधिक महत्व देता था और इस लोक के प्रति उदासीन था। इस दृष्टि को बदलकर उन्हें जीवनोन्मुख बनाया। इस कार्य के लिए उन्होंने भगवद् गीता को नया अर्थ दिया और कर्मयोग के सिद्धान्त को लोगों के सामने रखा जो राष्ट्रीय पुनर्जागरण के कार्य में बड़ा ही महत्वपूर्ण और प्रेरणादायक सिद्ध हुआ।

तब हालत कुछ ऐसी थी कि अपने समाज के दोष दिखाने और पाश्चात्य समाज, जीवन, विचार और कृतित्व का गुणगान करने में ही हमारे पढ़े-लिखे विचारक गौरव महसूस करते थे। भारत के बहुसंख्यक समाज की धर्म-प्रणाली, रीति-रिवाज, समाज-व्यवस्था - सभी उनकी दृष्टि में हेय थी। तिलक ने इस बात को समझा और अपने समाज, धर्म और इतिहास के प्रति लोगों का अभिमान जगाया। इसी के साथ उन्होंने समाज विभिन्न गुटों के मध्य उत्पन्न हुए विरोधों को दूर कर राष्ट्रीयता की भावना को पैदा किया और राष्ट्रीयता की भावना से ही पूर्ण स्वराज्य की माँग का उदय हुआ जिसका प्रेरक वाक्य था - “स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है।”

(क) ‘चैतन्यहीन होने’ से क्या तात्पर्य है? स्पष्ट कीजिए कि देश की चैतन्यहीनता का क्या कारण था। (2)

(ख) देशवासियों की तुलना सूखे पत्तों से क्यों की गई है? (2)

(ग) उस परिस्थिति' में तिलक ने कौन-सा महत्वपूर्ण कार्य किया? (1)

(घ) देश के पढ़े-लिखे विचारकों की क्या सोच थी? (2)

(ङ) तिलक ने किस आधार पर उनके दृष्टिकोण में परिवर्तन किया? (1)

(च) तिलक ने देशवासियों में अपने समाज और धर्म के प्रति अभिमान जगाना आवश्यक क्यों समझा? (1)

(छ) सामाजिक सौहार्द के लिए तिलक का क्या योगदान था? (1)

(ज) तिलक की राष्ट्रीयता की भावना किस रूप में प्रतिफलित हुई? (2)

(झ) गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए। (1)

(ञ) उपसर्ग और प्रत्यय अलग कीजिए: संकल्प, स्वातंत्र्य। (1)

(ट) मिश्रवाक्य में बदलिए: (1)

‘देश के करोड़ों निवासी जंगल के सूखे पतों की तरह अस्त-व्यस्त थे।'

उत्तर- (क)

- जड़ता/स्वाभिमान का अभाव।
- परतंत्रता।

(ख) देशवासियों में निश्चेतनता, अस्त-व्यस्तता और एकता का अभाव।

(ग) असंगठित देशवासियों का संगठन।

(घ)

- अपनी हीनता और दोषपूर्णता।
- पाश्चात्य जीवन और विचार शैली का गुणगान।

(ङ) गीता के कर्मयोग के आधार पर।

(च) वे अपने धर्म समाज, रीति-रिवाजों को हेय मानने लगे थे।

(छ) अपने धर्म, समाज और इतिहास के प्रति स्वाभिमान जाग्रत करना।

(ज)

- विभिन्न गुटों के विरोधों को दूर करना।
- राष्ट्रीयता की भावना पैदा करना।
- पूर्ण स्वराज्य की मांग। (किन्हीं दो का उल्लेख)

(झ) भारतीय समाज को लोकमान्य तिलक का योगदान। (अन्य उपयुक्त शीर्षक भी स्वीकारें।)

(ञ) सम् + कल्प

स्वतंत्र + य (केवल 'सम्' तथा 'य' का उल्लेख पर्याप्त है।)

(ट) देश के करोड़ों निवासी थे जो जंगल के सूखे पत्तों की तरह अस्त-व्यस्त थे।

खण्ड-'ख'

3. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए: (5)

(क) लड़का-लड़की एक समान

(ख) प्रगतिशील भारत

(ग) घटती राष्ट्रीयता

(घ) भ्रष्टाचार

उत्तर- किसी एक विषय पर निबंध अपेक्षित:

- भूमिका/प्रस्तावना
- विषय-वस्तु
- भाषा की शुद्धता एवं प्रस्तुति

4. उत्तराखण्ड में प्राकृतिक आपदा के कारण यातायात व्यवस्था की अस्त-व्यस्तता के कारण आप क-ख-ग महाविद्यालय देहरादून में होने वाले साक्षात्कार में उपस्थित नहीं हो पाए। महाविद्यालय के प्रशासनिक अधिकारी को पत्र लिखकर किसी अन्य तिथि को साक्षात्कार का अवसर देने की प्रार्थना कीजिए। (5)

अथवा

सामान्य नागरिक के प्रतिदिन उपयोग की वस्तुओं को महँगाई पर चिन्ता व्यक्त करते हुए किसी प्रतिष्ठित समाचार-पत्र के संपादक को पत्र लिखिए।

उत्तर- पत्र-लेखन:

- आरंभ और अंत की औपचारिकताएँ
- प्रभावी विषय-वस्तु
- भाषा की शुद्धता, प्रवाह एवं लेख

5. (क) निम्नलिखित के संक्षेप में उत्तर दीजिए: (1×5=5)

(i) छापेखाने का आविष्कारक कौन था?

(ii) मुद्रित माध्यम की दो उल्लेखनीय विशेषताएँ लिखिए।

(iii) 'एंकर बाइट' किसे कहते हैं?

(iv) इंटरनेट-पत्रकारिता के विभिन्न नाम क्या हैं?

(v) फ्रीलांसर पत्रकार किसे कहते हैं?

(ख) 'महँगी होती उपचार-व्यवस्था' अथवा 'आवश्यक सुविधाओं से वंचित गाँव' विषय पर एक आलेख लिखिए। (5)

उत्तर- (क) (i) जर्मनी का गुटेनबर्ग।

(ii) स्थायित्व, लिखित भाषा का विस्तार।

(iii) बाइट - टेलीविजन पर किसी भी खबर को पुष्ट करने के लिए घटना स्थल पर मौजूद लोगों के कथन को दिखाना।

(iv) इंटरनेट पत्रकारिता, ऑन लाइन पत्रकारिता, साइबर पत्रकारिता।

(कोई दो)

(v) भुगतान के आधार पर विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में लिखने वाले पत्रकार को, जो किसी पत्र का नियमित पत्रकार नहीं होता।

(ख) किसी एक पर आलेख लेखन-

- प्रभावी विषय - वस्तु
- प्रस्तुति
- भाषा की शुद्धता

6. सिर उठाती सांप्रदायिकता' अथवा 'अंधविश्वास के पसरते पाँव' विषय पर एक फ़ीचर का आलेख लिखिए। (5)

उत्तर- किसी एक पर फीचर लेखन-

- प्रभावी विषय - वस्तु
- प्रस्तुति
- भाषा की शुद्धता

खण्ड-'ग'

7. निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए: (2×4=8)

मैं और, और जग और, कहाँ का नाता,

मैं बना-बना कितने जग रोज़ मिटाता;

जग जिस पृथ्वी पर जोड़ा करता वैभव,

मैं प्रति पग से उस पृथ्वी को ठुकराता।

मैं निज रोदन में राग लिए फिरता हूँ,

शीतल वाणी में आग लिए फिरता हूँ,

हों जिस पर भूपों के प्रासाद निछावर,

मैं वह खंडहर का भाग लिए फिरता हूँ।

(क) संसार के साथ कवि का किस प्रकार का नाता है और क्यों?

(ख) 'जग और मिटाने' से कवि का क्या आशय है? वह किस रूप में जग की रचना करता हैं?

(ग) वैभवशाली पृथ्वी से भी कवि का लगाव क्यों नहीं है?

(घ) 'रोदन में राग' और 'शीतल वाणी में आग' से कवि क्या आशय है?

उत्तर- (क)

- द्वन्द्वात्मक।
- क्योंकि कवि को सामाजिक/सांसारिक बंधनों की चिंता नहीं।

(ख)

- अपनी रचना/कविता के कल्पना संसार को बनाने-मिटाने से।
- काव्य संसार, कल्पना का संसार, भाव जगत आदि।

(ग)

- समृद्धि के प्रति विरक्ति का भाव।
- अपने ही कल्पना संसार में मस्त रहना।

(घ) जीवन परस्पर विरोधी भावों का सामंजस्य।

अथवा

आतंक अंक पर काँप रहे हैं

धनी, वज्र-गर्जन से बादल !

त्रस्त-नयन मुख ढाँप रहे हैं।

जीर्ण बाहु, है शीर्ण शरीर,

तुझे बुलाता कृषक अधीर

ऐ विप्लव के वीर !

चूस लिया है उसका सार,

हाड़-मात्र ही है आधार,

ऐ जीवन के पारावार !

(क) 'त्रस्त-नयन' कौन हैं? उनके मुख ढाँपने का क्या कारण है?

(ख) कृषक की अधीरता का क्या कारण है? उसकी शारीरिक दशा पर टिप्पणी कीजिए।

(ग) 'विप्लव का वीर' कौन है? उसके लिए यह सम्बोधन क्यों प्रयुक्त किया गया है?

(घ) आशय स्पष्ट कीजिए:

'चूस लिया है उसका सार,

हाड़-मात्र ही है आधार'

उत्तर- (क)

- धनिक समाज, शोषक वर्ग।
- क्रांति से संत्रस्त होकर।

(ख)

- शोषक समाज के व्यवहार से।
- निर्धनता के कारण शरीर कंकाल मात्र।

(ग)

- बादल।
- क्रांति का संदेश लेकर आ रहा है।

(घ)

- निरंतर शोषण।
- अस्थिमात्र रह गया है।

8. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए: (2×3=6)

तुलसी सरनाम गुलामु है राम को, जाको रुचै सो कहै कछु ओऊ।

माँगि कै खैबो, मसीत को सोइबो, लैबेको एकु न दैबेको दोऊ।

(क) अनुप्रास अलंकार के दो उदाहरण चुनकर लिखिए।

(ख) काव्यांश के भाषिक सौन्दर्य पर टिप्पणी कीजिए।

(ग) काव्यांश का भाव-वैशिष्ट्य लिखिए।

उत्तर- (क)

- कहै कछु,
- दैबेको दोऊ,
- सरनाम गुलामु। (कोई दो)

(ख)

- ब्रजभाषा।
- मुहावरे का प्रयोग।
- वर्ण मैत्री।
- प्रसाद गुण।

(ग)

- संसार के प्रति वैराग्य भाव।
- राम में आस्था।
- भक्ति भाव की पराकाष्ठा।

अथवा

प्रात नभ था बहुत नीला शंख जैसे

भोर का नभ

राख से लीपा हुआ चौका

(अभी गीला पड़ा है)

बहुत काली सिल जरा से लाल केसर से

कि जैसे घुल गई हो

स्लेट पर या लाल खड़िया चाक

मल दी हो किसी ने

(क) प्राप्त नभ की तुलना किससे की गई है और क्यों?

(ख) काव्यांश में चित्रित परिवेश के वैशिष्ट्य पर टिप्पणी कीजिए।

(ग) पद्यांश के भाषिक सौन्दर्य को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- (क)

- शंख से।
- स्वच्छता, पवित्रता के कारण।

(ग)

- गाँव की सुबह।
- राख से लीपा हुआ चौका।
- स्लेट की लालिमा।
- लालिमा कालिमा को चीर कर आने का अहसास कराती हुई।

(ग)

- उपमानों के प्रयोग से सूर्योदय का प्रभावशाली शब्द-चित्र।
- बिम्ब - योजना।
- भाषा - बोधगम्य।
- खड़ी बोली।
- उपमा और उत्प्रेक्षा अलंकार।

9. निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए: (3+3=6)

(क) 'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' कविता के आधार पर चिड़िया के परों में चंचलता और कवि के पदों की शिथिलता के कारणों पर विचार करते हुए कविता के प्रतिपाद्य को स्पष्ट कीजिए।

(ख) 'सही बात का सही शब्द से जुड़ना' क्यों ज़रूरी है? ऐसा न होने के क्या दुष्परिणाम हो सकते हैं? 'बात सीधी थी, पर' के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

(ग) पेट की आग राम-भक्ति के मेघ से ही शान्त हो सकती है - तुलसी की रचना की पृष्ठभूमि में तत्कालीन सामाजिक दशा पर टिप्पणी कीजिए।

उत्तर- (क)

- कवि की प्रतीक्षा में किसी का न होना, शिथिलता का कारण।
- किसी प्रिय के मिलने की आशा हमारे प्रयासों को गति देती है।
- चि़डिया को बच्चों से मिलने की आशा है इसलिए उसकी गति में चंचलता है।

(ख)

- सही भाव/अर्थ के संप्रेषण के लिए।
- सटीक शब्दों का प्रयोग अपेक्षित।
- जहाँ ऐसा नहीं होता वहाँ भाव एवं भाषा दोनों निरर्थक।

(ग)

- किसान, वणिक आदि व्यवसाय लाभकर नहीं।
- बेरोजगारी की समस्या।
- परिणामस्वरूप भुखमरी।
- ऐसे में केवल राम का सहारा।

10. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए: (2×4=8)

जीवन के दूसरे परिच्छेद में भी सुख की अपेक्षा दुख ही अधिक है। जब उसने गेहुँए रंग और बटिया जैसे मुख वाली पहली कन्या के दो संस्करण और कर डाले तब सास और जिठानियों ने ओठ बिचकाकर उपेक्षा प्रकट की। उचित भी था क्योंकि सास तीन-तीन कमाऊ वीरों की विधात्री बनकर मचिया के ऊपर विराजमान पुरखिन के पद पर अभिषिक्त हो चुकी थी और दोनों जिठानियाँ काक-भुशुंडि जैसे काले लालों की क्रमबद्ध सृष्टि करके इस पद के लिए उम्मीदवार थीं। छोटी बहू के लीक छोड़कर चलने के कारण उसे दंड मिलना आवश्यक हो गया। जिठानियाँ बैठकर लोक-चर्चा करतीं और उनके कलूटे लड़के धूल उड़ाते; वह मट्ठा फेरती, कूटती, पीसती, राँधती और उसकी नन्हीं लड़कियाँ गोबर उठातीं, कंडे पाथतीं।

(क) भक्तिन जीवन के दूसरे परिच्छेद में भी सुख क्यों न प्राप्त कर सकी? उसके सुखाभाव के कारणों पर तर्कसहित विचार कीजिए।

(ख) भक्तिन की सास और जिठानियों के पारिवारिक सम्मान-प्राप्ति का क्या कारण था तथा भक्तिन के प्रति उनके व्यवहार में क्या परिवर्तन हुआ?

(ग) आशय स्पष्ट कीजिए – "छोटी बहू के लीक छोड़कर चलने के कारण उसे दंड मिलना आवश्यक हो गया।"

(घ) भक्तिन और उसकी दोनों नन्हीं लड़कियों को पारिवारिक दण्ड किस रूप में भोगना पड़ा? इस दण्ड के औचित्य-अनौचित्य के विषय में अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर- (क)

- कन्याओं को जन्म देने के कारण।
- परिवार में लड़का-लड़की में भेद के कारण।

(ख)

- पुत्र रत्नों का जन्म।
- कन्या को जन्म देने के कारण भक्तिन पर अन्याय।

(ग) पुत्र-जन्म की परम्परा का भक्तिन द्वारा तोड़ा जाना, इसलिए सास-जेठानियों द्वारा उसकी उपेक्षा।

(घ)

- उनका कार्य भार बढ़ गया।
- घर के सारे काम उनकी जिम्मेदारी। (औचित्य-अनौचित्य के विषय में विद्यार्थी के स्वतंत्र विचार संभव)

अथवा

रात्रि की विभीषका को सिर्फ पहलवान की ढोलक ही ललकारकर चुनौती देती रहती थी। पहलवान संध्या से सुबह तक, चाहे जिस खयाल से ढोलक बजाता हो, किन्तु गाँव के अर्धमृत, औषधि-उपचार-पथ्य-विहीन प्राणियों में वह संजीवनी शक्ति ही भरती थी। बूढ़े-बच्चे-जवानों की शक्तिहीन आँखों के आगे दंगल का दृश्य नाचने लगता था। स्पन्दन-शक्ति शून्य स्नायुओं में भी बिजली दौड़ जाती थी। अवश्य ही ढोलक की आवाज में न तो बुखार हटाने का कोई गुण था और न महामारी की सर्वनाश शक्ति को रोकने की शक्ति ही, पर इसमें संदेह नहीं कि मरते हुए प्राणियों को आँख मूंदते समय कोई तकलीफ़ नहीं होती थी, मृत्यु से वे डरते नहीं थे।

(क) रात्रि की विभीषिका कैसी थी? ढोलक किस रूप में उसको चुनौती देती थी?

(ख) दंगल का दृश्य किस-किसमें किन रूपों में उपयोगी होता था और क्यों?

(ग) ढोलक की आवाज़ औषध-गुण-हीन होकर भी मृतप्रायों पर क्या प्रभाव डालती थी?

(घ) 'औषधि-उपचार-पथ्य-विहीन' तथा 'स्पन्दन-शक्ति-शून्य स्नायुओं' का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- (क)

- अंधकार, सन्नाटा, करुण सिसकियाँ, आहें, सियारों का क्रंदन, पेचक की डरावनी आवाज़।
- इस भीषणता को और महामारी की सर्वनाशक शक्ति को ढोलक की आवाज़ चुनौती देती थी।

(ख)

- दंगल के दृश्य में पहलवान विरोधी को ढोलक की आवाज से प्रेरणा पाकर पटकता था।
- मरणासन्न को प्रेरणा - रोग और उससे उत्पन्न कष्टों को धराशायी करने की, लड़ने की, जूझने की।

(ग)

- बिजली जैसी चेतना का शरीर में दौड़ना।
- मृत्यु के भय से छुटकारा।

(घ)

- दवाई, इलाज, उपयूक्त भोजन से रहित शरीर में हलचल नहीं।
- मरणासन्न स्थिति।

11. निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए: (3x4=12)

(क) जाति-प्रथा के आधार पर श्रम-विभाजन समाज में किन समस्याओं का कारण रहा है? आधुनिक समय में इस दिशा में क्या परिवर्तन हुआ है? पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए।

(ख) 'शिरीष का फूल संघर्ष-भरे जीवन में भी जीवन्त बने रहने की सीख देता है।' उपयुक्त तर्क देकर

प्रतिपादित कीजिए।

(ग) 'नमक' कहानी भारत-पाक के विस्थापित पुनर्वासित लोगों के दिलों को टटोलने वाली कहानी है-उदाहरणों के आधार पर पुष्टि कीजिए।

(घ) जीवन की जद्दोजहद ने चालों के व्यक्तित्व को कैसे संपन्न बनाया? स्पष्ट कीजिए।

(ङ) जीजी ने इन्दर सेना पर पानी फेंके जाने को किस तरह सही ठहराया? इस विषय में लेखक की प्रतिक्रिया को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- (क)

- विभाजन में अस्वाभाविकता।
- रुचि पर आधारित नहीं।
- स्वयं चुनाव का अधिकार नहीं।
- जीवन भर एक ही पेशे से बँधना पड़ता है।

(किन्हीं दो का उल्लेख)

- आजकल यह स्थिति नहीं है।
- पेशा रुचि और योग्यता पर आधारित।

(ख)

- भयंकर गरमी में भी फूलना।
- दुख-सुख में हार न मानना।
- गर्मी में भी रस संपन्न बने रहना।

(ग)

- भारतीय सिख बीबी का पाकिस्तान से नमक मँगाना।
- पाकिस्तानी कस्टम अधिकारी का भारत प्रेम।
- भारतीय अधिकारी का ढाका प्रेम।

(घ)

- माँ परित्यक्ता।
- छोटी-सी अभिनेत्री।
- भयावह गरीबी।
- माँ का पागलपन।
- सामाजिक दुत्कार। आदि से उन्हें जीवन मूल्य मिले।

(ङ)

- बिना त्याग, दान नहीं, अपनी जरूरत पीछे रख कर दिया गया दान, जो दूसरों का कल्याण करे-वह दान होता है।
- गेहूँ उगाने के लिए बीज अलग से बोना होता है, इसी तरह पानी फेंकना भी बीज की बुआई है।
- पहले खुद दें, फिर देवता देंगे।

(कोई दो)

- लेखक को पहले अंधविश्वास लगता था परंतु बाद में सोच बदलने लगी।

12. निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए: 3+3=6

(क) कैसे कहा जा सकता है कि आत्मकथा का 'जूझ' शीर्षक, कथा-नायक की केन्द्रीय चारित्रिक विशेषता को उजागर करता है?

(ख) यशोधर बाबू समय के साथ ढल सकने में असफल क्यों रह जाते हैं? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

(ग) मुअनजो-दड़ो सिन्धु घाटी-सभ्यता का एक नियोजित शहर था। उदाहरणों के आधार पर टिप्पणी कीजिए।

उत्तर- (क)

- पढ़ने के लिए ललक और संघर्ष।
- विपरीत परिस्थितियों से जूझना।
- पढ़ने के साथ-साथ खेत में काम करन की शर्त स्वीकारना।

(ख)

- यशोधर बाबू में अनिर्णय की स्थिति रहती है।
- उनकी परवरिश उनके अनुभव भी उन्हें बदलाव से रोकते हैं।
- व्यवहार से अधिक आदर्शों में विश्वास।

उदाहरण-

- पत्नी द्वारा आधुनिकता को स्वीकार करना जबकि यशोधर बाबू के लिए यह समहाउ इंप्रापर है।
- पुत्र द्वारा घरेलू कार्यों के लिए नौकर रखने का सुझाव, किंतु स्वयं करने की पेशकश न करना।

(अन्य उपयूक्त उदाहरण भी स्वीकार्य)

(ग)

- शहर की चौड़ी सड़कों, गलियों का विस्तार, नालियों का निर्माण।
- सम्पन्न समाज के घर, कामगारों के घर नियमबद्ध क्रम से दिखाई देते हैं।
- सड़क के दोनों ओर घर, उनके दरवाज़े, खिड़कियाँ, उप सभा-गृह।

13. निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए: 2×2=4
(क) 'यशोधर बाबू का व्यक्तित्व द्वन्द्व भावना से ग्रस्त है' - पक्ष या विपक्ष में दो तर्क दीजिए।
(ख) ऐन फ्रेंक के व्यक्तित्व की दो विशेषताओं का सोदाहरण उल्लेख कीजिए।
(ग) कैसे कहा जा सकता है कि सिन्धु-घाटी की सभ्यता एक 'लो-प्रोफाइल' सभ्यता थी? पाठ के आधार पर लिखिए।

उत्तर- (क) -पक्ष

- यशोधर बाबू द्वारा 'समहाउ इंप्रापर' का प्रयोग उनके द्वन्द्व को दर्शाता है।
- अनिर्णय की स्थिति बनी रहती है।

-विपक्ष

- किशन दा से सीखी बातों का ज्यों का त्यों पालन।
- रिटायर होने पर गाँव के पुश्तैनी घर में बसने के निर्णय पर अडिग।

(ख)

- महिलाओं की सम्माननीय स्थिति के प्रति जागरूक।
- नाजियों के अत्याचारों को समझना।
- अपने अनुभवों, संस्मरणों को किट्टी की आड़ में सँजोना।

(ग)

- उसमें भव्यता थी, आडम्बर नहीं।
- उसका सौंदर्य बोध राजपोषित या धर्मपोषित न होकर समाज-पोषित था।

14. ''जूझ' कहानी उभरते किशोर-समाज को प्रेरणा देने वाली एक सफल कहानी है' - इस कथन के आलोक में 'जूझ' कहानी के उन जीवन-मूल्यों की विवेचना कीजिए जो किशोर-किशोरियों के लिए प्रेरक हैं। (5)

उत्तर- -जूझ का कथानायक

- कर्मठ
- श्रमशील
- सहनशील
- जुझारू
- दृढ़ संकल्पी

इसलिए किशोरों के लिए आदर्श है।
(उपर्यूक्त बिंदुओं का समावेश अपेक्षित)

अथवा

'ऐन फ्रेंक की डायरी इतिहास के दर्दनाक अध्याय के अनुभवों की कहानी है' - इस कथन के आलोक में उन जीवन-मूल्यों का उल्लेख कीजिए जो द्वितीय विश्व युद्ध में छिन्न-भिन्न हो गए थे।

उत्तर- -जो मानवीय मूल्य युद्ध के दौरान छिन्न-भिन्न हुए-

- प्रेम (व्यक्ति, वस्तु, प्रकृति, देश के प्रति),
- मानवीय संवेदनाएँ,
- शांति एवं सौहार्द का वातावरण,
- सामान्य जन के सपने, आशाएँ, कल्पनाएँ,
- वैचारिक अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता।
  (अन्य उपयुक्त जीवन-मूल्यों को भी स्वीकारें)